भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH)

प्रिलिम्स के लिये:

[अमूर्त सांस्कृतिक विरासत](), [यूनेस्को](), प्रदर्शन कला, [कुटियाट्टम](), रामलीला, रम्माण, छऊ नृत्य, [कालबेलिया](), [मुडियेट्टु](), संकीर्तन, [नवरोज़](), [योग](), कुंभ मेला, [गढ़वाल हिमालय](), कुट्टमपालम, [रामचरितमानस](), [तुलसीदास](), [मार्शल आर्ट](), [महायान बौद्ध धर्म](), [वज्रयान बौद्ध धर्म](), मुद्रा, वैष्णववाद, दुर्गा पूजा, [गरबा]()

मेन्स के लिये:

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का महत्त्व और इसके संरक्षण की आवश्यकता।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (ICH) क्या है?

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के अंतर्गत वे **प्रथाएँ, अभिव्यक्तियाँ, ज्ञान** और **कौशल आते** हैं, जिन्हें समुदाय, समूह तथा कभी-कभी व्यक्ति अपनी सांस्कृतिक विरासत के भाग के रूप में पहचानते हैं।

- इसमें ऐसी विरासत से जुड़े **उपकरण, वस्तुएँ, कलाकृतियाँ** और सांस्कृतिक स्थान भी शामिल हैं।
- ICH यह सुनिश्चित करता है कि सांस्कृतिक विरासत स्मारकों और वस्तुओं के संग्रह पर समाप्त न हो। इसमें **परंपराएँ या जीवंत अभिव्यक्तियाँ** भी शामिल हैं।

वे कौन-से डोमेन हैं जिनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत प्रकट होती है?

- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा के लिये यूनेस्को के वर्ष 2003 कन्वेंशन के अनुसार, ICH **पाँच व्यापक डोमेन** में प्रकट होता है:
  - अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के वाहक के रूप में भाषा सहित **मौखिक परंपराएँ** और अभिव्यक्तियाँ।
  - **कला प्रदर्शन**
  - **सामाजिक प्रथाएँ,** रीति-रिवाज़ और उत्सव संबंधी कार्यक्रम
  - प्रकृति और ब्रह्मांड से **संबंधित ज्ञान व अभ्यास**
  - पारंपरिक **शिल्प कौशल**

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत क्या है?

- ICH ऑफ ह्यूमैनिटी की प्रतिनिधि सूची में गुजरात के गरबा (2023) के हालिया शिलालेख के साथ, भारत के पास अब प्रतिष्ठित यूनेस्को की ICH ऑफ ह्यूमैनिटी की प्रतिनिधि सूची में **15 अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्त्व** हैं।
- भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची:

क्रम संख्या	अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्त्व	शिलालेख का वर्ष
1.	कुटियाट्टम, संस्कृत थियेटर	2008
2.	वैदिक जप की परंपरा	2008
3.	रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन	2008
4.	रम्माण, भारत के गढ़वाल हिमालय के धार्मिक उत्सव और परंपरा का मंचन	2009
5.	छऊ नृत्य	2010
6.	राजस्थान के कालबेलिया लोक गीत और नृत्य	2010
7.	मुदियेट्टू, केरल का अनुष्ठान थियेटर और नृत्य	2010

	नाटक	
8.	लद्दाख का बौद्ध जप: हिमालयी लद्दाख क्षेत्र, जम्मू और कश्मीर, भारत में पवित्र बौद्ध ग्रंथों का पाठ	2012
9.	मणिपुर का संकीर्तन, अनुष्ठान गायन, ढोलक बजाना और नृत्य करना	2013
10.	जंडयिाला गुरु, पंजाब, भारत के ठठेरों के बीच पारंपरिक तौर पर पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने का शिल्प	2014
11.	नवरोज़	2016
12.	योग	2016
13.	कुंभ मेला	2017
14.	कोलकाता में दुर्गा पूजा	2021
15.	गुजरात का गरबा	2023

- **कुटियाट्टम (केरल):**
  - कुटियाट्टम **केरल के सबसे पुराने पारंपरिक थियेटर में से एक** है जो **संस्कृत परंपराओं** पर आधारित है।
  - इसमें शैलीबद्ध और संहिताबद्ध रंगमंचीय भाषा में **नेत्र अभिनय (आँख की अभिव्यक्ति) तथा हस्त अभिनय (इशारों की भाषा)** प्रमुख हैं। इसमें मुख्य **चरित्र के विचारों और भावनाओं** पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
  - एक एकल कार्य को निष्पादित करने में कई दिन लग सकते हैं और एक **पूर्ण प्रदर्शन 40 दिनों** तक चल सकता है।
  - यह पारंपरिक रूप से **कुट्टमपालम (Kuttampalams)** नामक थियेटरों में प्रदर्शित किया जाता है, जो **हिंदू मंदिरों** में स्थित हैं।

- **वैदिक जप की परंपरा (भारत):**
  - **वेदों** में 3500 वर्ष पहले विकसित और रचित **संस्कृत कविता, दार्शनिक संवाद, मिथक तथा अनुष्ठान जपों** का एक विशाल भंडार शामिल है।
  - वेद **विश्व की सबसे पुरानी जीवित सांस्कृतिक परंपराओं** में से एक का प्रतीक हैं।
  - वैदिक विरासत में **चार वेदों** में एकत्रित अनेक पाठ और व्याख्याएँ शामिल हैं, जिन्हें आमतौर पर **"ज्ञान की पुस्तकें"** कहा जाता है, भले ही उन्हें मौखिक रूप से प्रसारित किया गया हो।
  - इस परंपरा का मूल्य न केवल इसके **मौखिक साहित्य** की समृद्ध सामग्री में निहित है, बल्कि **हज़ारों वर्षों से ग्रंथों को अक्षुण्ण बनाए** रखने में ब्राह्मण पुजारियों द्वारा अपनाई गई **सरल तकनीकों** में भी निहित है।
  - यद्यपि वेद समकालीन भारतीय जीवन में एक **महत्त्वपूर्ण भूमिका** निभाते हैं, एक हज़ार से अधिक वैदिक पाठ शाखाओं में से **केवल तेरह** ही बची हैं।

- **रामलीला (उत्तर भारत):**
  - रामलीला, शाब्दकि रूप से **"राम की लीला"** दृश्यों की एक शृंखला में **रामायण महाकाव्य** का प्रदर्शन है जसिमें **गीत, कथन, गायन और संवाद** शामलि हैं।
  - यह **राम और रावण** के बीच **युद्ध** की याद दलिाता है तथा इसमें देवताओं, ऋषयिों एवं वशि्वासपात्रों के बीच संवादों की एक शृंखला शामलि है।
  - यह **दशहरे** के त्योहार के दौरान पूरे उत्तर भारत में आयोजति की जाती है।
  - सर्वाधकि प्रचलति रामलीलाएँ **अयोध्या**, रामनगर और **बनारस, वृंदावन, अल्मोड़ा, सतना** तथा **मधुबनी** की हैं।
  - रामायण का यह मंचन रामचरतिमानस पर आधारति है जसिकी रचना तुलसीदास ने 16वीं शताब्दी में की थी।

- **रम्माण (उत्तराखंड):**
  - यह प्रतविर्ष अप्रैल के अंत में उत्तराखंड के सलूर-डुंगरा के जुड़वाँ गाँवों में मनाया जाता है।
  - यह संरक्षक देवता **भूमयिाल देवता** के सम्मान में मनाया जाने वाला एक धार्मकि त्योहार है।
  - यह आयोजन अत्यधकि जटलि अनुष्ठानों से बना है। इसमें **राम महाकाव्य** और वभिन्नि कविदंतयिों के एक **संस्करण का पाठ तथा गीतों एवं मुखौटा नृत्यों का प्रदर्शन** शामलि है।

- **क्षत्रयि जाति** के स्थानीय लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले भंडारी अकेले सबसे पवित्र मुखौटों में से एक, आधे आदमी, आधे शेर हिंदू देवता, **नरसिम्हा** का **मुखौटा पहनने** के हकदार हैं।

- **छऊ नृत्य (पूर्वी भारत):**
  - **छऊ नृत्य** में **महाभारत** और **रामायण** सहित महाकाव्यों के प्रसंगों, स्थानीय लोककथाओं तथा अमूर्त विषयों का अभिनय किया जाता है।
  - इसकी तीन **अलग-अलग शैलियाँ सरायकेला (झारखंड), पुरुलिया** (पश्चिम बंगाल) और **मयूरभंज** (ओडिशा) के क्षेत्रों से हैं, पहले दो में मुखौटे का उपयोग किया जाता है।
  - इसकी उत्पत्ति का पता **नृत्य और मार्शल प्रथाओं** के स्वदेशी रूपों से लगाया जा सकता है।
  - इसके आंदोलन में नकली **युद्ध तकनीकें, पक्षियों और जानवरों की शैलीगत** तथा गाँव की गृहणियों के कामकाज़ पर आधारित गतिविधियाँ शामिल हैं।
  - यह नृत्य रात में एक खुली जगह में पारंपरिक और लोक धुनों के साथ किया जाता है, जिसे **रीड पाइप मोहरी तथा शहनाई पर बजाया** जाता है।

- **कालबेलिया लोक गीत और नृत्य (राजस्थान):**
  - गीत और नृत्य [कालबेलिया] समुदाय की **पारंपरिक जीवन** शैली की अभिव्यक्ति हैं।
  - कालबेलिया एक समय पेशेवर **साँप संचालक** थे। आज वे संगीत और नृत्य में अपने पूर्व व्यवसाय को दोहराते हैं जो नए तथा रचनात्मक तरीकों से विकसित हो रहा है।
  - लहराती काली स्कर्ट में **महिलाएँ** नागिन की **हरकतों की नकल करते हुए नृत्य करती** हैं और घूमती हैं, जबकि **पुरुष खंजरी ताल वाद्य** तथा **पूंगी** पर उनका साथ देते हैं, जो पारंपरिक रूप से साँपों को पकड़ने के लिये बजाया जाने वाला एक लकड़ी का वाद्य यंत्र है।
  - नर्तक पारंपरिक **टैटू डिज़ाइन, आभूषण और छोटे दर्पणों तथा चाँदी के धागे से कढ़ाई** वाले परिधान पहनते हैं।
  - गाने कालबेलिया के **काव्य कौशल** को भी प्रदर्शित करते हैं, जो **प्रदर्शन के दौरान सहज रूप** से **गीत लिखने और गीतों को सुधारने के लिये** जाने जाते हैं।
  - पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रसारित, गीत और **नृत्य मौखिक परंपरा का हिस्सा** बनते हैं जिसके लिये कोई पाठ या प्रशिक्षण मैनुअल मौजूद नहीं है।

- **मुडयिेट्टु (केरल):**
  - इसके बजाय शवि ने आदेश दयिा कि दारकिा की **मृत्यु देवी काली** के द्वारा ही होगी।
  - **मुडयिेट्टु केरल** का एक अनुष्ठानकि नृत्य नाटक है जो **देवी काली** और राक्षस दारकिा के बीच युद्ध की **पौराणकि कथा पर आधारति** है।
  - मुडयिेट्टु कलाकार **मंदरि के फर्श** पर रंगीन पाउडर से देवी काली की एक वशिाल छवि बनाते हैं, जसि '**कलाम**' कहा जाता है, जसिमें **देवी की आत्मा का आह्वान** कयिा जाता है।
  - कलाकारों ने नाटक का मंचन कयिा जसिमें दवि्य **ऋषि नारद** ने राक्षस दारकिा को नयिंत्रति करने के लयिे **शवि** को प्रेरति कयिा, जो नश्वर लोगों द्वारा पराजति होने के प्रतप्रितरिक्षति है।
  - मुडयिेट्टू का प्रदर्शन प्रतविर्ष चलक्कुडी पूझा, पेरयिार **और मूवट्टुपुझा नदयिों** के कनिारे वभिन्नि गाँवों में देवी के मंदरिों **'भगवती कावुस'** में कयिा जाता है।

- **बौद्ध जप (लद्दाख):**
  - **लद्दाख** क्षेत्र के मठों और गाँवों में, **बौद्ध लामा** (पुजारी) बुद्ध की भावना, **दर्शन एवं शिक्षाओं** का प्रतिनिधित्व करने वाले पवित्र ग्रंथों का जाप करते हैं।
  - लद्दाख में **बौद्ध धर्म** के दो रूप **महायान व** वज्रयान प्रचलित हैं और इसके चार प्रमुख संप्रदाय हैं, अर्थात्**नगिमा, कागयूद, शाक्य व गेलुक**।
  - प्रत्येक **संप्रदाय में जप के कई रूप** होते हैं, जिनका अभ्यास जीवन-चक्र अनुष्ठानों के दौरान तथा बौद्ध और कृषि कैलेंडर के महत्त्वपूर्ण दिनों की अवधि के दौरान किया जाता है।
  - भिक्षु **विशिष्ट पोशाक** पहनते हैं तथा दिव्य बुद्ध का प्रतिनिधित्व करने वाले हाथ के इशारे **मुद्रा**) बनाते हैं और **घंटियाँ, ड्रम, झाँझ व तुरही जैसे वाद्ययंत्र जप को संगीतमयता एवं लय** प्रदान करते हैं।
  - यह जप समूहों में किया जाता है, या तो **घर के अंदर बैठकर या मठ** के **प्रांगणों** या **निजी घरों** में नृत्य के साथ।

- **संकीर्तन (मणपिुर):**
  - **संकीर्तन** में **मणपिुर के मैदानी** इलाकों में निवास करने वाले **वैष्णव लोगों** के जीवन के वभिन्नि चरणों और धार्मकि अवसरों को चह्निति करने के लयि कयिा जाने वाला अनुष्ठानकि **गायन, ढोलक बजाना और नृत्य** शामलि है।
  - कलाकार गीत और नृत्य के माध्यम से **कृष्ण** के **जीवन एवं कार्यों का वर्णन करते** हैं।
  - एक वशिष्टि प्रदर्शन में **दो ढोलक वादक** और लगभग **दस गायक-नर्तक** एक हॉल या घरेलू आँगन में **बैठे भक्तों से घरि हुए** प्रदर्शन करते हैं।
  - संकीर्तन के दो मुख्य **सामाजकि कार्य** हैं:
    - यह मणपिुर के वैष्णव समुदाय के भीतर एक **एकजुट शक्त**ि के रूप में कार्य करते हुए उत्सव के अवसरों पर लोगों को संयुक्त करता है।
    - यह जीवन-चक्र से संबंधति समारोहों के माध्यम से व्यक्तिऔर समुदाय के बीच संबंधों को स्थापति एवं सुदृढ़ करता है।

- **पारंपरिक तौर पर पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने का शिल्प (पंजाब):**
  - **जंडियाला गुरु के ठठेरों** का शिल्प पंजाब में पीतल और ताँबे के बर्तन बनाने की पारंपरिक तकनीक का अनुपालन करता है।
  - प्रक्रिया ठंडी धातु की टिकिया प्राप्त करके शुरू होती है, जिन्हें चपटा करके पतली प्लेट बना दी जाती है। फिर इन प्लेटों को हथौड़े से पीटकर घुमावदार आकार दिया जाता है, जिससे छोटे कटोरे, रिम वाली प्लेट, पानी और दूध के लिए बड़े बर्तन, बड़े खाना पकाने के बर्तन और अन्य कलाकृतियाँ बनती हैं।
  - यह प्रक्रिया **कूल मेटल केक** प्राप्त करके से शुरू की जाती है, जिन्हें चपटा करके पतली प्लेट बना दी जाती है। फिर इन प्लेटों को हथौड़े से पीटकर घुमावदार आकार दिया जाता है, जिससे **छोटे कटोरे, रिम वाली प्लेट, पानी और दूध के लिए बड़े बर्तन, बड़े खाना पकाने के बर्तन और अन्य कलाकृतियाँ** बनती हैं।
  - प्लेटों को गर्म करने, हथौड़े से पीटने और उन्हें विभिन्न आकारों में मोड़ने के लिये सावधानीपूर्वक **तापमान को नियंत्रित करने की आवश्यकता** होती है, जो ज़मीन में गाड़े गए **लकड़ी से चलने वाले छोटे स्टोव** (हाथ से पकड़े जाने वाली धौंकनी की सहायता से) का उपयोग करके प्राप्त किया जाता है।
  - बर्तनों को **रेत और इमली के रस जैसी पारंपरिक सामग्रियों** से पॉलिश करके मैन्युअल रूप से तैयार किया जाता है।

- **नवरोज़ (भारत):**
  - [नवरोज़ पारसियों (ज़ोरोएस्ट्रिनिज़्म)](#) और [मुसलमानों](#) (शिया व सुन्नी दोनों) के लिये नए वर्ष का जश्न है।
  - यह प्रतिवर्ष **21 मार्च** को अफगानिस्तान, अज़रबैजान, **भारत**, ईरान, इराक, कज़ाखस्तान, किर्गिज़स्तान, पाकिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्की, तुर्कमेनिस्तान और उज़्बेकिस्तान में मनाया जाता है।
  - इस दौरान अपनाई जाने वाली एक **महत्त्वपूर्ण परंपरा अपने प्रियजनों के साथ विशेष भोजन** का आनंद लेने के लिये **शुद्धता, चमक, आजीविका और धन का प्रतीक वस्तुओं** से सज़ी **'टेबल' के चारों ओर एकत्रित** रहता है।

- **योग (भारत):**
  - **योग** में आसन, **ध्यान**, नियंत्रित श्वास, शब्द जप और **अन्य तकनीकों की एक शृंखला शामिल** है जो व्यक्तियों को **आत्म-बोध** करने, किसी भी पीड़ा को कम करने और **मुक्ति की स्थिति** में सहायता करने के लिये अभिकल्पित की गई है।
  - यह अधिक मानसिक, **आध्यात्मिक** और **शारीरिक सुख (Physical Wellbeing)** के लिये मन को शरीर तथा **आत्मा के साथ एकीकृत करने** पर आधारित है।
  - परंपरागत रूप से योग को **गुरु-शिष्य मॉडल (गुरु-शिष्य)** का उपयोग करके प्रसारित किया गया था, जिसमें योग गुरु संबंधित ज्ञान और कौशल के मुख्य संरक्षक होते थे।

- **कुंभ मेला (उत्तर भारत):**
    - **कुंभ मेला** पृथ्वी पर तीर्थयात्रियों का सबसे बड़ा **शांतपूर्ण जमावड़ा** है, जसिके दौरान यात्री पवत्रि नदी में स्नान करते हैं या डुबकी लगाते हैं।
    - यह उत्सव प्रतविर्ष में बारी-बारी से **इलाहाबाद, हरदि्वार, उज्जैन व नासकि** में आयोजति कयिा जाता है और इसमें जात, पंथ या लगि की परवाह कयिे बगैर लाखों लोग भाग लेते हैं।
    - भक्तों का मानना है क गिंगा में **स्नान करने से व्यक्त पािपों से मुक्त हो जाता** है और उसे जन्म एवं मृत्यु के चक्र से मुक्त मिलि जाती है।
    - हालाँक, इसके प्राथमकि वाहक **अखाड़ों, आश्रमों अथवा धार्मकि संगठनों से संबंधति हैं जो केवल भक्षिा पर** जीवन यापन करते हैं।

- **दुर्गा पूजा (कोलकाता):**
    - **दुर्गा पूजा** एक वार्षिक त्योहार है जो हिंदू माँ **देवी दुर्गा** की **दस दिवसीय पूजा** का प्रतीक है।
    - देवी की पूजा **महालया (Mahalaya)** के उद्घाटन दिवस पर शुरू होती है, जब देवी के मिट्टी की मूर्तियों पर **नेत्र चित्रित** किये जाते हैं।
    - यह त्यौहार **दसवें दिन समाप्त होता** है, जब मूर्तियों को नदी में विसर्जित कर दिया जाता है जहाँ से मिट्टी आई थी।
    - दुर्गा पूजा की इस पहल के लिये सराहना की जाती है कि इसमें **हाशिये पर मौजूद समूहों** और **व्यक्तियों** के साथ-साथ **महिलाओं की सुरक्षा** में उनकी भागीदारी शामिल है।

- **गरबा (गुजरात):**
    - [गरबा](#) एक अनुष्ठानिक और भक्तिपूर्ण नृत्य है जो हिंदू त्योहार **नवरात्रि** के अवसर पर किया जाता है, जो **'शक्ति'** की पूजा के लिये समर्पित है।
    - यह नृत्य एक केंद्र में जलाकर रखे गए दीपक या देवी शक्ति की प्रतिमा अथवा मूर्ति के निकट किया जाता है, जो ब्रह्मांड में नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है।

निष्कर्ष:

भारत में जीवंत और विविध सांस्कृतिक परंपराओं, पारंपरिक अभिव्यक्तियों, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का एक विशाल समूह है जिसके अंतर्गत उत्कृष्ट कृतियाँ शामिल हैं जिन्हें सांस्कृतिक विरासत के इन रूपों के अस्तित्व एवं प्रसार के लिये महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों को संबोधित करने की दृष्टि से संस्थागत समर्थन तथा प्रोत्साहन की आवश्यकता है। भारत को विभिन्न संस्थानों, समूहों, व्यक्तियों, गैर-सरकारी संगठनों, शोधकर्त्ताओं एवं विद्वानों को प्रोत्साहित (Revitalize) करने की आवश्यकता है ताकि वे भारत की समृद्ध अमूर्त सांस्कृतिक विरासत को मज़बूत करने, संरक्षित करने और बढ़ावा देने हेतु गतिविधियों/परियोजनाओं में संलग्न हो सकें।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न 1. भारत के धार्मिक इतिहास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2020)

1. स्थाविरवादी महायान बौद्ध धर्म से संबद्ध हैं।
2. लोकोत्तरवादिन संप्रदाय बौद्ध धर्म के महासंघिक संप्रदाय की एक शाखा थी।
3. महासंघिकों द्वारा बुद्ध के देवत्त्वारोपण से महायान बौद्ध धर्म को प्रोत्साहित किया।

उपर्युक्तकथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 3
(d) 1, 2 और 3

प्रश्न 2. मणिपुरी संकीर्तन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2017)

1. यह एक गीत और नृत्य प्रदर्शन है।
2. केवल करताल (सिम्बल) ही वह एक मात्र वाद्ययंत्र है जो इस प्रदर्शन में प्रयुक्त होता है।
3. यह भगवान कृष्ण के जीवन और लीलाओं को वर्णित करने के लिये किया जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) 1, 2 और 3
(b) केवल 1 और 3
(c) केवल 2 और 3

(d) केवल 1

प्रश्न 3. भारत की संस्कृतएिवं परंपरा के संदर्भ में 'कलारीपयट्टू' क्या है? (2014)

(a) यह शैवमत का एक प्राचीन भक्तपिंथ है जो अभी भी दक्षणि भारत के कुछ हसि्सों में प्रचलति है।
(b) यह काँसे और पीतल के काम की एक प्राचीन शैली का है जो अभी भी कोरोमंडल क्षेत्र के दक्षणिी हसि्से में पाई जाती है।
(c) यह नृत्य-नाटकिा का एक प्राचीन रूप है और मालाबार के उत्तरी हसि्से में एक जीवंत परंपरा है।
(d) यह एक प्राचीन मार्शल कला और दक्षणि भारत के कुछ हसि्सों में एक जीवंत परंपरा है।

??????:

प्रश्न. भारतीय कला वरिासत का संरक्षण वर्तमान समय की आवश्यकता है। चर्चा कीजिये। (2018)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/intangible-cultural-heritage-ich-of-india